

कवि-संज्ञा  
हिन्दी कविता शिर्षक "रामनाम विनु विरचे जगि जनमा" (1)  
कवि - गुरुनानक

1. प्रश्न - वाणी कब विष के समान हो जाती है ?

उत्तर - जिसवाणी में रामनाम का अन्वार नहीं होता, वह वाणी केवल विष का ही वाहन (उत्तरी) बनती है। जो वाणी विष के समान होती है जिससे रामनाम की महिमा का गायन नहीं किया जाता।

2. प्रश्न - नाम-कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?

उत्तर - कवि गुरुनानक कहते हैं कि रामनाम कीर्तन ही एक मात्र सुकर्म है, और सारे कर्म व्यर्थ हैं। दुष्ट, कमण्डल, चोटी और जनेऊ धारण करने तथा विभिन्न तीर्थों पर भ्रमण करने से जीवन में शांति नहीं मिल सकती, रामनाम भजन के बिना ये सारे कर्म व्यर्थ हैं। रामनाम का कीर्तन ही शांति प्रदान कर सकता है और सभी कर्म सार्थक कर्म हैं।

3. प्रश्न - हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय है ? कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है ?

उत्तर - हरिरस से कवि का तात्पर्य रामनाम कीर्तन से प्राप्त होने वाला आनन्द है। भले ही किसी को गुरु का अनुग्रह प्राप्त हुआ हो, पर अज्ञान की नाम-महिमा के गायन से प्राप्त होने वाला आनन्द तो भक्त गुरुनानक के ही भाग्य में है।

जो दुःख में दुःख नहीं जानता है, जो लुब्ध, स्नेह और भय से भुक्त हो, जिसके लिए सोना और मिट्टी एक समान हो; निंदा-स्तुति में जो अंश नहीं करता, जो लोभ, मोह, अहं, अभिमान से विरक्त हो आशा-निराशा, काम-क्रोध और मोह-माया से जो विरत हो जाता है, नानक कवि कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति के घर अर्थात् हृदय में ब्रह्म का निवास होता है।

4. प्रश्न - गुरु की कृपा से किस भुक्ति की पहचान हो पाती है ?

उत्तर - गुरुनानक देव कहते हैं, कि गुरु की कृपा से ही किसी व्यक्ति को लुब्ध-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, निंदा-स्तुति, मिट्टी-सोना, ज्ञान-अज्ञान में अंशद ज्ञान होता है। इसी अंशद ज्ञान को गुरुनानक ने गुरु की कृपा से प्राप्त 'भुक्ति' का नाम दिया है।

5. प्रश्न - कवि जिसके बिना ज्ञान में यह जन्म व्यर्थ मानता है ?

उत्तर - कवि गुरुनानक ने रामनाम के कीर्तन के बिना इस संसार में जन्म लेना व्यर्थ मानते हैं। क्योंकि रामनाम के कीर्तन से ही अनुग्रह संसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

1. प्रश्न-कर्मवीर पाहले हमें क्या शिक्षा मिलनी है?

6. प्रश्न- प्रथम पद के आधार पर बताएं कि कवि ने अपने युग में धर्म-साधना के कैसे-कैसे रूप देखे थे?

उत्तर- गुरु नानक ने अपने युग में धर्म-साधना के विभिन्न रूप देखे थे। इनके युग में जौड़ु, सिद्ध, नाथपंथी, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि अपनी-अपनी भिन्नात्मक धर्म-साधना में लीन थे। सिद्धों ने तंत्रिक प्रथा-चार अपनाया था। तंत्रिक साधना ~~जौड़ु~~ जौड़ु, शैवों, और वैष्णवों में समान रूप से फैली हुई थी। इस जंध-विश्वास और धर्मडमर से धर्म-साधना की सार्विकता क्षीय हो रही थी। धर्म-साधना भूलतः निर्गुण एवं सगुण दो वर्गों में ~~विभक्त~~ विभक्त थी।